

सं ॥ ५५ ॥ युगराज
 सं ॥ ५६ ॥ मतिभुज
 सं ॥ ५७ ॥ नरपतिराज सं ॥ ७२
 सं ॥ ५८ ॥ हरिराज सं ॥ ७३
 सं ॥ ५९ ॥ कृष्णराज सं ॥ ७४
 सं ॥ ६० ॥ युगराज सं ॥ ७५
 सं ॥ ६१ ॥ मतिभुज सं ॥ ७६
 सं ॥ ६२ ॥ नरपतिराज सं ॥ ७७
 सं ॥ ६३ ॥ हरिराज सं ॥ ७८
 सं ॥ ६४ ॥ इक्ष्वाकु सं ॥ ७९
 सं ॥ ६५ ॥ युगराज सं ॥ ८०
 सं ॥ ६६ ॥ हरिराज सं ॥ ८१
 सं ॥ ६७ ॥ कपिलराज सं ॥ ८२
 सं ॥ ६८ ॥ हरिराज सं ॥ ८३
 सं ॥ ६९ ॥ गोविंदराज सं ॥ ८४
 सं ॥ ७० ॥ युगराज सं ॥ ८५
 सं ॥ ७१ ॥ मतिभुज सं ॥ ८६



शिवशक्तिपंडितरुक्मिणीखड्गमहा
 अर्घपात्रवलित्रिवलिपंचदलिंगणगोश
 मकोमारीपारायणसाफूधनेवसमे॥स्नानादिविधिर्ध्याया॥

नित्यं च नमः ॥ सूर्याय ॥ अस्मत्स्वेष्टदेवीकुञ्जीकादेवीसारदे
विष्णवे ॥ कुरु कुरु मातृगणमहाभैरवायार्थनमः ॥ गुरुनमस्का
र ॥ अखण्डमण्डलाकारमित्यादि ॥ अर्घपात्रासनायनमः ॥ जल
पात्राय ॥ वलिपात्राय ॥ आत्मासनाय ॥ कूर्मासनाय ॥
किरीटविभेकोकणाय ॥ अष्टाय फट् ॥ हें हूं फट् वज्रपंज
रेखाहा ॥ बलमकुलेकुलमबलेहूं हूं हूं फट् ॥ त्यासुः ॥ वामे
गुरुभ्योनमः ॥ दक्षिणगणपतये ॥ अग्रेस्वेष्टदेवताये ॥ प्राण
याम ॥ यं १६ रं ६४ वं ३२ ॥ करसोधनं ॥ मृत्युहरे अष्टाय फट् ॥

ॐ ह्रीं रान्प्रदे अंगुष्ठाभ्यां ॥ ह्रिं उग्रचण्डे तर्जनीभ्यां ॥ रिपुरम
र्दिनीमध्यमाभ्यां ॥ हूं क्रेंसदोरक्ष २ अनामिकाभ्यां ॥ त्यां मा
नुंसः केंनी च्छाभ्यां ॥ मृत्युहरे करतरय चाभ्यां फट् ॥ एवं हृद
यादि ॥ जलपात्रपूजा ॥ हृदसं जलपात्राय ॥ षडंगधेनुमुडां
॥ गायत्री ॥ ॐ उग्रचण्डये विष्णवे दुर्गादेवी धीमहि तन्नो चण्ड
प्रचोदयात् ॥ अर्घपात्रपूजा ॥ हृदसं अर्घपात्राय ॥ त्रिकूट
उज्जैननाले ॥ हूं हूं हूं हूं हूं पंचरत्नाय ॥ षडंगआवाहनादि

यानिमुद्रा ॥ मृतशुद्धि ॥ आत्मपूजा ॥ श्रीसर्वती आवाहन ॥ त्रिदेव
वलि ॥ मुद्रातर्पण ॥ कलशपूजा ॥ आधारशक्ति येत्यादि ॥ वृ
षासनाय ॥ अंजलि ॥ हरमृत्युजपाय अमृतीशमहाभैरवाय
अमृतसंजीविनीशक्तिसंहिताय संपूर्णकलशमूर्तये पादुका
३ ॥ ध्वनं वलि ॥ षडंग धेनुमुद्रा ॥ हस्तसिद्धमुद्रा ॥ श्रीयेनमः
लक्ष्मै नमः ॥ जप ॥ ॐ जुं सः स्वाहा ॥ स्तोत्र ॥ रत्नौषधीसकलतीर्थजलेन पू
र्णसहस्रपद्मवसुशोभितपुष्पमाला ॥ यज्ञेषु यागे मुनिभिः प्रशस्तानां
कुम्भमूर्तिं शिवशक्तिसुतं नमामि ॥ अत्रगन्धादि ॥ शिवशक्तिपूजा ॥

आधारशक्तिये न्यादि ॥ वृषासनाय ॥ सिंहासनाय ॥ हस्त
आनन्दशक्तिभैरवानन्दवीराय तये महाविद्याराजेश्वरी शि
वशक्तिकुम्भामृतमूर्तये पादुका ॥ वलि ॥ ह्रीं अस्मितांगभैरवा
य नमः ॥ ह्रीं कुरु भैरव ॥ वरुण भैरव ॥ क्रौरु भैरव ॥ उन्मत्त भै
रव ॥ कपालीश भैरव ॥ भीषण भैरव ॥ संहार भैरव ॥ तेभ्यो
वलि ॥ अंबुजाणी ॥ कं माहेश्वरी ॥ चं कौमारी ॥ टं वैष्णवी ॥ तं
वाराही ॥ पं इन्द्राणी ॥ यं वामुण्डा ॥ शं महालक्ष्मी ॥ तेभ्यो वलि
॥ षडंग ॥ धेनुयोनिमुद्रा ॥ जप ॥ ह ऐ स ऐ ॥ स्तोत्र ॥ सुखदीप

लेशानन्दकरेपरशुधारिणी ॥ स्वच्छन्दस्फुरणमन्त्री निवेही
 कुलरूपिणी ॥ अन्नगन्धादि ॥ ॥ दध्नस्य यन्त्रपूजा ॥ ॐ आधार
 शक्तयेत्यादि ८ ॥ शुभासनाय २ ॥ निशुभासनाय २ ॥ महिषासना
 य २ ॥ सिंहासनाय २ ॥ ध्यानं ॥ तप्तवामी करावर्णानां नारलोचशोभि
 ता ॥ किरीटीकुण्डलाद्यैश्चकेयूरैः मणिमयैः ॥ रत्नमालाविविधैश्च
 हाडमालाविभूषितैः ॥ अष्टादशभुजाक्रान्तापीनवक्षस्तनूरुहा ॥
 सर्वालंकारसंयुक्तां नडिकोटिसमप्रभां ॥ खड्गं शरस्तथा चक्रं व
 त्रं कुशधरभुभा ॥ वरदाभयहस्ता च खट्वांगंडमहं विना ॥ रुद्र

एता प्रचण्डा च चण्डोगा च एतानाथिका ॥ चण्डा चण्डवती चण्डी चण्डरूपा
 निचण्डिका ॥ रोचना अरुणा कृष्णानीलाधुमा च पीतीका ॥ पीता च पा
 ण्डुरा शेया आलीढा हारिश्चिता ॥ स्वपरिवात्यं बुक्ता आयातु
 इह मण्डले ॥ ध्यानपुण्यं नमः ॥ रुद्रचण्डा देवी पांडुकां ॥ वलि ॥ प्र
 चण्डा देवी पा ० ॥ चण्डवोग्रा देवी पा ० ॥ चण्डनाथिका देवी ० ॥ च
 ण्डा देवी पा ० ॥ चण्डवती देवी पा ० ॥ चण्डी देवी पा ० ॥ चण्डरूपा
 देवी पा ० ॥ अतिचण्डिका देवी पा ० ॥ वलिधत्ते नं ॥ लुं इन्द्राय वज्र
 हस्ताय सुराधिपतये ऐरावतात्मनाय नमः ॥ रं अग्नये शक्ति

लायने जो धिपतये छागा सनाय ॥ मुं यमाय दण्ड हस्ता यप्रे ता धि
 पतये महिमा सनाय ॥ धूं नैर् न्याय खक्र हस्ता यराक्षमा धि
 पतये प्रेता सनाय ॥ वुं वरुणा यपाश हस्ता यजना धिपतये म
 कर सनाय ॥ यं वायवे ध्वज हस्ता यपवना धिपतये मृगा स
 नाय ॥ सुं कुवेराय गडा हस्ता ययश्वा धिपतये नरा सनाय ॥ हूं
 ईशानाय त्रिशूल हस्ता यभूता धिपतये वृषा सनाय ॥ उं ब्रह्मणे
 यप्रहस्ता यस्वर्गा धिपतये हंसा सनाय ॥ अं अनन्ताय वक्र हस्ता
 यमाना धिपतये गरुडा सनाय ॥ ध्वते नं वलि ॥ जया देवी पाडु

कां ॥ बलि ॥ विजया ॥ अजिता ॥ अपराजिता ॥ जंभनी देवी
 ॥ स्तंभनी ॥ मे। हनी ॥ आकर्षणी ॥ ध्वते नं वलि ॥ अं आं वं सां तां
 असितांग भैरव सहित बालोपाडु कां ॥ इं ईं रुमैरव सहित माहिभयै
 ॥ उं उं वण्ड भैरव सहित कौमार्यै ॥ त्रं त्रं कोरु भैरव सहित वे
 सव्यै ॥ लूं लूं उन्मत्त भैरव सहित वाराह्यै ॥ हं हं कपालीश
 भैरव सहित इन्द्राण्यै ॥ ॐ ॐ भीषण भैरव सहित बामुण्डाण्यै
 ॥ अं अः संहार भैरव सहित महालक्ष्म्यै ॥ ध्वते नं वलि ॥ डां
 डाकिनी ॥ रं राकिनी ॥ लो लाकिनी ॥ कां काकिनी ॥ सां सा

किनी ॥ हाहा किनी पा ॥ पू ॥ अनेनं वलि ॥ ॐ ओडियान पीठा य
॥ जोगालं धर पीठा य ॥ पू पू र्ण गिरि पीठा य ॥ कों कामरु पीठा
य ॥ अनेनं वलि ॥ आं जली ॥ ॐ हीरा ज्य प्रदे ह्ये ॥ उग्र वर दे रिपुर म
हिनी हूं प्रे सदा रक्ष ॥ आं मां गुं लः म लु हरे श्री उग्र वर दे वी प्रो डकी
पू जया मि नमः ॥ ३ ॥ षडंग ॥ ॐ हीरा ज्य प्रदे ह द मा ये लो दि दू गाय
त्री ॥ ॐ उग्र वर दे ये वि भ्र ह दु र्गा दे वी धी म ही त नो वर दी प्र नो दया
त ॥ अनेनं वलि ॥ मूल या आं जली ॥ अघोर ॥ वज्र ॥ वनिसि मय ॥
रव डंग ॥ वलि ॥ रव डंग स उग्र वर दे सिद्धि लक्ष्मी कालिया आं जली ॥
वलि हाय के ॥ समस्त मंत्र पीठे त्यादि ॥ गोड ना स पूजा ॥ गेलो ॥

ल गणे श्वराय नमः ॥ वलि ॥ गो ग्रा स पूजा ॥ ननं द्या दि र्पे व गो मा
न के भ्यो नमः ॥ वलि ॥ कौमारी पूजा ॥ अंबु सा एषा य व मा न
के भ्यो नमः ॥ वलि ॥ पाठ सा पू ल पूजा ॥ रुद्र वर दे दि ॥ आं ज
ली ॥ हीरा ज्य प्र दे त्यादि ॥ ३ ॥ षडंग वलि ॥ धेनु यो नि मुद्रा ॥ मूल
वलि हाय के ॥ ॐ ही श्री दक्ष यज्ञ वि ना शि ने म हा द्यो रा ये यो
मिनी को टि म रि ह ना ये ही सर काली भट्टा रि का ये सां गा ये स
म रि वा रा ये सा पु धा ये स बा ह ना ये र मां पू जां वलि गृ ह २ हूं
॥ त्या हा ॥ त ले या त्यां कि ता ने यंत्र तं ॥ नि र्वा णा ॥ न्य क म हा व

ली॥ विदार्जनयाय॥ तत्त्वायामि॥ यातेरुद्र॥ पावकानः॥
आजिघु॥ श्यांमालेखी॥ श्रीश्वते॥ आकृष्टे॥ नातारमिंद्र
॥ अश्वत्थोकोत्रि॥ अर्द्धमासा॥ यं च वलि॥ गणनांत्वा॥ जात
वेदसे॥ घृतं घृत॥ नमो वलुशाय॥ असंख्यातो॥ गणगोत्र
सकोमारी॥ नमो गनेभ्यो॥ आयंगोः॥ जातवेदसे॥ आकाश
माला॥ अस्या कमिन्द्र॥ हृत्कंसिंहरमं पूजा॥ लमित॥ श्री
श्वते॥ चतुस्वस्तीत्यादि॥ धूपदीपनैवेद्यप्रतिष्ठा॥ मनोज्ञति
॥ त्रिदेवजप॥ नित्ययाजुर्कोवाकं याय॥ जपछाय॥ सोम

अखंडमण्डलाकारं श्रीसंवर्त्ती॥ ब्रह्माणीकमलेन्दु॥ श्यामा
रक्ता॥ मार्कण्डेयो॥ नमोस्तुतेमहाडुर्गे चण्डिके चण्ड विक्रमे
विश्वेश्वरीजगद्धात्रीस्थितिसंहारकारिणी॥ सर्वसिद्धिकरी
देवीजयरूपावतारिणी॥ दुर्गरिजिते दुर्गे महावैरि विनाशिनी
त्वं श्रीत्वमीश्वरी तौरित्वं देवी जतनी परा वाक्पतिस्त्वं च सा दे
वी मूर्तित्रयस्त्वत्पिणी॥ उंकारे बलया देवी ह्रींकारे परमा
त्मिके॥ हूंकारे चण्डकारे च ईंकारे विन्दुसंयुते॥ दुर्गे दुर्गा
क्षरं वैवर्द्धीवीर्जनामत्वाक्षरं॥ उग्रचण्डीति विख्याता स्या

संनयनं सरं ॥ हनुवर्गं त्रिनेत्राच भुजाष्टादशधारिणी
॥ आनीतं हनुते स्थितो महिषासुरपातिनी ॥ शिखि
धामिनी तं शूलैर्दत्वा विदारिता ॥ महावैरि विनाशाय
हामय विदारिता ॥ ॐ ह्रीं रात्र्यप्रदेह दिह्ये ॥ उग्रचरोरि
पुमर्दिनी शिखायां कूं कूं सदा रक्षक वचः ॥ त्वामाहुः
नेत्रत्रयेन तुहरे अश्रय कृद ॥ नमः स्वाहा वमर कूं कूं
स्तिश्वषडंगकः ॥ षडंगेन समा युक्तो मेतत्तत्र मुदाहृतं ॥
द्वात्रिंशदक्षरा देवी दुर्गे श्वरिण्यमवयेत् ॥ कूं कारैः गति

तं नादं भयात्पापि भयं करं त्रैलोक्ये पूजिता देवी पुष्प
धूपादितर्पणैः ॥ अलिफलवादिभिर्युक्तैः पूजनीया महा
त्मकैः ॥ सरत्काले महापूजा महादृष्ट्या भिवा सिनी ॥ नवम्या
भोग पूजा च दशम्या चैव चालयेत् ॥ सर्वं वैरि विनाश
यजयत्तु वा वतारिणी ॥ त्रिसंध्यः पठेन्नित्यं मेकचित्
समाहितः ॥ शतमावर्तयेद्यत्तु मुच्यते सर्वपातकैः ॥ संग्रा
मे जयती देवी विषक्ष फलनाशिनी ॥ स्ववर्गरक्षणी देवि
सुमती नमो सुते ॥ आद्यर्पितो वा वा तेन महापाते महा

पुत्रे। महोरगे। तत्रैव शमशाने व महावने। महाशक्ति
कोपे व महाभयोपसंस्थिते। एतौ राजकुलेषु ते विवादे स
जयी भवेत्। स्मरणात्तारिणी देवि मुच्यते सर्व संकटात्॥
वराह उवाच॥ एतैरुद्रचण्डादिभिर्युते॥ महादुर्गेश्वरी
देवी उवाच॥ एतन्मोक्षुते॥ आ देवी॥ माया कुण्डलीनी॥ यथा वा
न॥ केताने प्रणाम॥ स्वस्ति नो मिमीता॥ संहिताश्च ध्याय
पारायण॥ चण्डी पाठं त्रिभुवनं हृत्पत्रं केतानल॥ स्थान
मण्डलं सकाकाय॥ एकानेक॥ आसलिकाय॥ वलिधाय
साक्षिभ्यो य॥ अस्मत्त्वेष्टेष्टयो सारदोत्सवप्रतिपदपूजा

संपूर्ण साक्षिणे नमः॥ अथैहि ध्यांति यि या वाक्य हिय केम
ल॥ ध्यते हि ध्याया कर्म॥ ते हो हो ले न क मुमाले॥ ॥
अथ नवमी कुमारी पूजा॥ नित्य यामाल को धुन के॥ कौमा
री वी न कल द्वाय॥ पिखा लं रू स बा म्भान लं स्व य विधि
थो॥ ईका पल्कान गाले॥ रक्षो हनं॥ जा पित स ले ख कि
लत य॥ अथ वोच॥ मत्तान गाले॥ ते जी सि॥ मत्ता फा ता
वा स ग्वन न्नाय॥ स्वस्ति नो मिमीता॥ वेत सि दूर स्व ग
न तित के न कि न लं॥ न द द्य का॥ त्वं न विष्ट रा॥ दधिः

॥ वाफ हनी ॥ सिफारति ॥ वाफ हनी ॥ ते जो सि ॥ ता
यह ले प्रति जा ॥ मनो नूति ॥ गावो त जो हला मालयने ॥ स्वस्ति
भो मिमीता ॥ इधेन कालु बाया पीने फले सफे कतु त के ॥ पा
ले लोक आचात न सुर्यो र्घ ॥ अद्या दि ॥ वाक्य ॥ सार हो त सब
महान वर्यां को मारी पादार्थ कर्तु ॥ को मारी पातु ती त ल स कुल
ल सु ला स्यं तु ती स स्व पो ल आ वात न लं ख त य के ॥ के स्या न ता
न के ॥ आ वात न कुल पु या दे ली स फे कतु त के ॥ कुल ल नु जा
पु जा या क आ वात न कुल ल पू जा या त के चि पं थी य के ॥

20 वन्देलास्तूलाया
नवरात्रविधि

ASHA ARCHIVES
3295

विषयीयके पुनः लिखित आयात सकल्यं वरावभुत धाम तो स
लनेने ॥ लि हावया वत ले सत्रित लकाय ॥ धव ज्या मधूङ्सा
मुमात् ॥ अने नवमी विधिः ॥ ॥ दशमी कुङ्कुवजि को यानः
वलिते वत ता स्यंति त्यसामाले कधन के ॥ नवलास्वानपुत्स्ये
देवदक संश्रिया जलि छा य ॥ यजमान स्वस्तिक सफे कनुव
कं लाहात स स्वस्तिक वोयथे सखद्रु शिवशक्तिलव्रह्मास्ये नि
मर्द्धन ॥ रक्षोहनं ॥ वलि अद्य वोव ॥ मता ॥ तेजी लि ॥ मना फा
ताइया सगुन तत्वा य ॥ असुर गति ॥ चन्दन सिन्दूर सगुन नव
लास्वानखद्रु संजजमान स्त विधये ॥ सेफारति प्रतिष्ठा ॥ मना

मूर्ति॥ पिथुसकोपतिसफरुसितस्यै गमनयाय॥ मंत्राग
मनेवार्थलाभायक्षेमायविजयायव। शत्रुपक्षविनाशाय
पुनरागमनायव॥ स्ववाकलङ्क्यावफुटसियाले॥ स्वक्र
वासरणस्यैकायावकायाथासंतय॥ साद्धिथास्यैतार्थे॥
वासरणैलिहायधनेवनेलास्कूलयानवरात्रविधिना
वासरणस्तदक्षिणाशुका१ वज्रिकूल१० जाकिंकूल१० पा
तलाकैआवातकैकायद्वधनेछानवानेलास्कूलया॥
संवत्सरे५० आग्निनशुदि६ बुद्धिरात्रयार्थेयसोस्यैश्रीनदि
रात्रनसिद्धवर्त्तकोसुभम् — — — — — ॥

कैं नमः श्रीगुरुवे॥ अथ उक्तस्य स्कारविधिः॥ ॥ नमः॥ ॥
चतुःस्तकारः॥ म ह उ द्रे ना च्य यः॥ ऐं कुं जि का य वि
महे॥ त्रिकुटी न बाले॥ ऊं कीं कुं प्र स्फुर र घोर र॥ म
ह म न न ज पे वा १०॥ आप मो च न म आः॥ व्रों वीं पूं मूं
प्र ल आ पं वि मुं च य वि मुं च य अ म तं आप य आप य स्वा हा
१०॥ ऊं कीं कुं कूं क ल आ पं वि मुं च य र अ म तं आप य र

स्वा हा १२॥ आ श्री पुं मूं अ क आ पं वि मो च य र अ म तं आप य र
स्वा हा १२॥ ज पे त॥ ऐं अ म ते अ म तो इ वे अ म त वी षिणी
अ म तं आप य र स्वा हा १०॥ ए जा॥ मूं आ न द भै र वा य
व ष त॥ स्फूर्ति आ न द भै र वी तौ लु ष त॥ आ वा ह ना
दि यो नि पुं उ द्रां द री ये त॥ इ ति द्र व्य लो क न वि धि











